नाई का सारांश

बाबू रामजीदास एक सम्पन्न परिवार के मुखिया हैं। उनकी पत्नी का नाम रामेश्वरी है। रामजीदास निःसन्तान है इस कारण उनकी पत्नी रामेश्वरी खिन्न रहती है। रामजीदास के छोटे भाई के यहाँ एक पुत्र एक पुत्री है। रामजीदास अपने भतीजे तथा भतीजी को बहुत प्यार करते हैं। उनका यह प्रेम उनकी पत्नी को अच्छा नहीं लगता है, उनके भतीजे रामजीदास को ही सब कुछ मानते थे। जब भी वे घर में घुसते बोलते

उन्हें पकड़ लेता और तरह-तरह की फरियाद करता है। एक दिन बालक ने ताऊजी से रेलगाड़ी लाने की फरियाद की। ताऊ ने पूछा कि उस रेल में किन-किनको बिठायेगा तो बालक सहज स्वभाव से कह देता है कि ताऊ जी को। जब ताऊजी ने यह पूछा कि वह अपनी ताई को नहीं बैठयेगा तो बालक ने सहज रूप में कह दिया कि वह ताईजी को रेल में नहीं बैठायेगा क्योंकि ताई उसे प्यार नहीं करती है।

रामेश्वरी अपने निःसन्तान जीवन पर दुःखी थी पर कभी इन बच्चों की किलकारियों में खेल-कूद से वे बहुत अधिक प्रसन्न भी हो जाया करती थीं।

एक दिन संध्या के समय रामेश्वरी छत पर घूम रही थी तभी मनोहर उनका भतीजा वहाँ आ गया। आकाश में पतंगे उड़ रही थी। पतंगों को देखकर उसने ताई रामेश्वरी से पतंग दिलाने को कहा पर रामेश्वरी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। उसी समय आसमान से एक पतंग कटकर छत के छज्जे की ओर गई। मनोहर उस पतंग को पकड़ने के लिए छज्जे की ओर दौड़ा, इसी समय मनोहर का पैर अचानक फिसल गया और गिरते समय उसने दोनों हाथों से मुंडेर को पकड़ लिया था। वह 'ताई" को मदद के लिए चीखा।

पहले तो रामेश्वरी ने उसकी चीख की ओर कोई ध्यान नहीं दिया लेकिन उसके दुबारा पुकारने पर रामेश्वरी का हृदय पिघल गया और

वह पकड़ने के लिए भागी लेकिन तब तक मनोहर के हाथ से मुंडेर छूट गयी और वह धड़ाम से नीचे गिर गया। इस दृश्य को देखकर रामेश्वरी भी चीखकर छज्जे पर गिर पड़ी। एक सप्ताह तक वह बुखार से पीड़ित रही तथा मूर्छित रही। जब उन्हें होश आया तो उसने सबसे पहले मनोहर की कुशलता पूछी। इसके बाद स्वस्थ होने पर प्रेम से अभिभूत होकर उसने मनोहर को गले लगा लिया और अब मनोहर उसे प्राणों से भी अधिक प्यार हो गया है।